पयूर्षण पर्व में बही धर्मगंगा

पुणे में चैत्यालय का स्थान परिवर्तन एवं पयूर्षण पर्व संपन्न

प्रकाशचंद जैन, पुणे । देश की जानी मानी आईटी नगर की मगरपट्टा सिटी में लगभग 10 जैन परिवार रहते है जिन्हें जिनदर्शन के लिए लगभग 6-7 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था । प्रतिदिन जिन दर्शन हो सके इस उद्देश्य के साथ यहां एक किराये का फ्लैट लेकर उसमें जिन चैत्यालय कुछ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया गया था । यहां आसपास के लगभग 50 परिवार नित्य दर्शन हेतु आने लगे । फ्लैट में स्थानाभाव के कारण अन्य गतिविधियों का संचालन नहीं हो पा रहा था । चैत्यालय से जुड़े हर सदस्य की यही भावना था कि इस कार्य हेतु बड़ा फ्लैट मिल जाए जहां समस्त धार्मिक आयोजन भी सुचारु रुप से संचालित हो सके निरंतर प्रयास पश्चात डिफोडिल मल्टी में 2 बीएचके का फ्लैट खरीदकर पयूर्षण पर्व के 2 दिन पूर्व 4 सितम्बर को पूर्ण विधि विधान से चैत्यालय स्थानांतरित किया गया ।

नवीन चैत्यालय में प्रथम प्रवेश का सौभाग्य सागर निवासी डॉ. प्रकाशंचद जैन परिवार (श्रीमती कुसुम, श्री अतुल, श्रीमती रुचि व आर्जव, ऋद्धि) को प्राप्त हुआ । नवीन चैत्यालय में पयूर्षण पर्व 100 से अधिक परिवारों ने हर्षोल्लासपूर्वक पर्व मनाया । क्षमावाणी के अवसर पर जंक फूड में सामिष पदार्थों पर तत्कालीन संवाद का आयोजन कर समाजजनों से जंक फूड छोड़ने का आह्वान किया गया । भक्ति गीत, नृत्य नाटिका व अन्य सांस्कृतिक आयोजन हुए तत्पश्चात मंदिर हेतु फ्लैट क्रय करने में सक्रिय भूमिका निभाने वाले अर्पण अशोक जैन, निर्मलकुमार जैन व डॉ. प्रकाशचंद व अन्य सदस्यों का सम्मान किया गया । कार्यक्रम का निर्देशन, चैत्यालय हेतु अर्थ प्रबंधन करने वाली प्रसिद्ध लेखिका एवं विदेशों में जैन सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन प्रस्तुत करने वाली डॉ. नीलम जैन ने किया । समाज के सभी सदस्यों ने खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ डॉ. नीलम जैन का आभार मान, सम्मान किया ।

गंज बासौदा

शांतिकुमार जैन, गंज बासौदा । नगर में पूज्य मुनि श्री 108 कुन्थुसागरजी महाराज एवं 105 क्षुल्लक हर्षित सागरजी महाराज के चातुर्मास सान्निध्य में प्रतिदिन नित्य पूजन, मुनिश्री के सारगर्भित प्रवचन तत्पश्चात आहारचर्या, दोपहर 3 बजे से क्लास भी मुनि श्री द्वारा ली जाती है ।

महावीर बिहार में प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा पश्चात पूजन आदि का कार्यक्रम सामूहिक रूप से सम्पन्न होता था । प्रतिदिन मुनि कुन्थुसागरजी महाराज के दस धर्मो पर प्रवचन हुये । पयूर्षण पर्व पर मुनि श्री के सान्निध्य में ही श्रावक शिविर का भी आयोजन किया गया । जिसमें 36 श्रावकों द्वारा दसों दिन के लिए घर परिवार त्याग कर ब्रह्मचारी अवस्था में रहकर तप साधना व प्रभु की आराधना की । प्रतिदिन शाम को क्षुल्लक हर्षित सागरजी के दस धर्मो पर आगम अनुसार प्रवचन हुये तत्पश्चात प्रभु की संगीतमय आरती में समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुनि श्री का सान्निध्य मिलने पर मैना सुन्दरी नाटिका का मंचन किया गया । नाटक के समस्त पात्र जैन समाज के स्थानीय कलाकारों द्वारा निभाये गये । नाटक देखने के लिए प्रतिदिन भारी संख्या में समाजजन महावीर बिहार पहुँचते थे । क्षमावाणी पर्व में श्रावक शिविर में भाग लेने वाले श्रावकों व 5 या उससे अधिक उपवास करने वाले श्रावकों का सम्मान किया गया ।

पयूर्षण पर्व पश्चात प्रति वर्षानुसार छठ को विमानोत्सव मनाया गया । चल समारोह दोपहर 12 बजे महावीर बिहार से प्रमुख मार्गों से होता हुआ निकला, मार्ग में सभी प्रमुख सामाजिक संगठनों द्वारा श्री जी की आरती उतारी गई । चल समारोह विद्याधामपुरम (बूढा पुरा जैन मंदिर) पहुंचने पर श्रीजी का अभिषेक-शांतिधारा सम्पन्न करायी गयी व मुनि श्री कुन्थुसागर जी के प्रवचनों का लाभ भी जैन समाज को प्राप्त हुआ । अंत में सकल जैन समाज की क्षमावाणी का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । जिसमें उपस्थित समाजजनों ने एकदूसरे से क्षमायाचना की । श्री जी की संगीतमय आरती की गई । उज्जैन के भाई फिरोज खान आर्केस्ट्रा पार्टी द्वारा रात्रि में जैन भजनों का रंगारंग कार्यक्रम किया गया ।

छतरपुर

सनत जैन, छतरपुर । जैन धर्मावलम्बियों के 10 दिवसीय पयूर्षण पर्व के समापन पर्व पर प्रतिवर्ष निकलने वाली श्रीजी की पालकी (शोभायात्रा) नगर में पहली बार 24 पालकियों के साथ धूमधाम एवं भव्यता के साथ निकाली गयी । छतरपुर में मुनिश्री के सान्निध्य में पहली बार पालकी निकाली गयी जो आकर्षण का केन्द्र रही । शोभायात्रा में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य मुनिश्री पवित्र सागर, मुनिश्री प्रयोग सागर, मुनिश्री पुष्पदंत सागर के कुशल मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद के साथ शोभायात्रा प्रारंभ हुई । श्री नेमीनाथ जिनालय बड़ा मंदिर से प्रारंभ होकर महल रोड़, प्रताप नगर तालाब होती हुई अतिशय क्षेत्र डेरा पहाड़ी जैन मंदिर पहुंची जहां श्रीजी का मंगल अभिषेक धार्मिक विधि विधान के साथ किया गया।

इस अवसर पर छतरपुर शहर में उत्कृष्ट सेवायें देने के लिए जैन समाज छतरपुर द्वारा डीआईजी केसी जैन, परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश श्री आदर्शकुमार जैन, एसडीएम छतरपुर श्री डीपी द्विवेदी, नेत्र विशेषज्ञ डॉ. खुराना का शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह् भेंटकर सम्मानित किया गया । डेरा पहाड़ी पर मुनिश्री का आर्शीवचन प्राप्त हुआ । दोपहर 1 बजे श्रीजी की पालकी (शोभायात्रा) अतिशय क्षेत्र डेरा पहाड़ी जैन मंदिर से बाबूराम चतुर्वेदी स्टेडियम, छत्रसाल चौराहा, महल तिराहा होते हुए पुन: नेमीनाथ जिनालय बड़ा मंदिर पहुंचकर संपन्न हुई। श्रीजी की पालकी के भ्रमण के दौरान श्रद्धालुओं ने अपने अपने घर के सामने श्रीजी की आरती की । शोभायात्रा में समाज के स्त्री, पुरुष, युवा बच्चे भजन गाते एवं श्रीजी की जयकारों के साथ अहिंसा एवं जियो और जीने दो की उद्घोषणा करते हुए चल रहे थे । शोभायात्रा मे पुरुष धोती, दुपट्टा, सफेद कुर्ते पजामे एवं महिलायें पीली एवं लाल साड़ी पहने एक व्यवस्थित कतार में चलते आकर्षक लग रहे थे । इस अवसर पर 10वीं और 12वीं के प्रतिभाशाली 30 विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री आदर्शकुमार जैन ने कहा कि 30 प्रतिभाओं में से 20 बेटियां होना यह दर्शाता है कि जैन समाज में बेटियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है । अरविंद बड़कुल अध्यक्ष अजितनाथ जिनालय, सनत जैन पत्रकार, बब्बू जैन, मोहित जैन, जयकुमार जैन, जितेन्द्र जैन, प्रदीप चौधरी, देवराज जैन, केसी जैन, प्रो. पीके जैन, प्रो. सुमतिप्रकाश जैन, देवेन्द्र जैन, इंजीनियर प्रदीप जैन ने पयूर्षण पर्व एवं पालकी महोत्सव मे सहयोग देने वाली सभी बंधुओं के प्रति आभार प्रकट किया है ।

बबीना

विनोद बैरागी, बबीना । नगर में पयूर्षण पर्व उत्साहपूर्वक मनाये गये । नित्य नियम पूजन पश्चात प्रवचन व संध्या को आरती, प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों, महिलाओं और पुरुषों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया । क्षमावाणी पर्व पर समाजजनों ने गतवर्ष में हुयी समस्त भूलों के लिए एक दूसरे से क्षमायाचना की । समाज के वरिष्ठजनों की उपिस्थति ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की । बैरागीजी ने बताया कि परम पूज्य 108 श्री सरलसागरजी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है जिसमें गुरु का महत्व बताया गया है । गुरु ही हमें मार्ग बताते है, माता पिता जन्म देते है पर गुरु जीवन देते है, सन्मार्ग बताते है, अंधकार रुपी मिथ्यात्व मिटाते है । ज्ञान रुपी दीपक जलाकर सम्यक मार्ग दिखाते है । गुरु ही खेवनहार है, जनम मरण मिटाते है । गुरु की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता । वे पत्थर को भगवान व आत्मा को परमात्मा से मिलाने का मार्ग प्रशस्त करते है । सच्चे गुरु के शरण में जो आता है उसे सबकुछ मिल जाता है । बिछड़ जाने पर इन संतो से नरक जैसा लगता है, पास में आकर तो देखो समवशरण सा लगता है ।

उज्जैन

शैलेन्द्र जैन, उज्जैन । फ्रीगंज स्थित दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर में गुजरात के कलाकारों द्वारा पयूर्षण पर्व में घी से भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा का निर्माण किया गया । धूपदशमी के दिन दोपहर से समाजजन प्रतिमा के दर्शन कर पुण्यलाभ लेने लगे । दिगम्बर जैन समाज द्वारा पयूर्षण के दौरान दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर में गुजरात से आई कलाकार हंसाबेन एवं उनके साथ आए सूरसिंह, शांताबेन एवं राकेश भाई ने संयुक्त रुप से भगवान पार्श्वनाथ की चार फीट उंची आकर्षक एवं मनमोहक प्रतिमा का निर्माण किया, जिसे मंदिरजी में सजाकर रखा गया था। प्रतिमा निर्माण में 74 किलो घी, 20 किलो नारियल की रस्सी व सुतली एवं लकड़ी का उपयोग किया गया। देश भर में कई प्रतिमाओं को बनाने वाली अहमदाबाद से आई राष्ट्रीय कलाकार हंसाबेन ने चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने अपनी टीम के साथ अभी तक कई स्थानों पर जाकर कांच, फाइबर, सीमेंट आदि के द्वारा प्रतिमाओं का निर्माण किया है ।